

## संश्लेषण विधि

### Synthetic method

विश्लेषण विधि में समस्या को जीवित शब्दों में तोड़कर उसके हल की विधि खोजी जाती है, परन्तु संश्लेषण विधि में समस्या के इन जीवित शब्दों को मिलाकर उसका हल प्रस्तुत किया जाता है। इस विधि में ज्ञान से अज्ञान की ओर चला जाता है। इसलिए यह शिक्षण की प्रगति-वैज्ञानिक विधि है।

**संश्लेषण विधि के पद-** सामान्यतः संश्लेषण विधि के कोई विशिष्ट पद नहीं हैं। परन्तु इसकी कार्य प्रणाली समस्या के निम्न तीन पद हैं।

I- **समस्या के आधार का ज्ञान** - कोई भी समस्या अपने में समस्या नहीं होती है उसका कोई आधार नहीं होता है, उसका कोई प्रवृत्तमिति होती है। संश्लेषण विधि में अध्यापक सर्वप्रथम बच्चों को यह बताता है कि समस्या का आधार प्रवृत्तमिति क्या है?

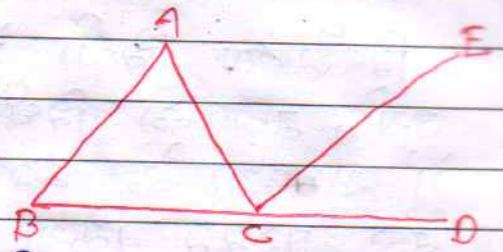
II- **समस्या का हल** - यह संश्लेषण विधि का अनिश्चित पद है यदि अध्यापक विश्लेषण के बाद संश्लेषण करता है तो वह समस्या का हल बच्चों के सहयोग से करता है और यदि वह सीधे संश्लेषण विधि द्वारा शिक्षण करता है तो हर समस्या का हल स्वयं प्रस्तुत करता पड़ता है।

III- **समस्या का ज्ञान** - इस पद पर अध्यापक बच्चों को उस समस्या का स्पष्ट ज्ञान कराता है।

**उदाहरण** - त्रिभुज के तीनों अन्तःकोणों का योग दो सप्तकोण, होता है, सिद्ध करो।

इस - विश्लेषण विधि के लिए यह हो रहे हैं -

- I - समस्या की प्रस्तुति ।
- II - समस्या की अनुभूति ।
- III - समस्या का विश्लेषण ।



अब संश्लेषण विधि की कार्य-प्रणाली को स्पष्ट किया जायेगा

I - समस्या के आधार पर ज्ञान (i) क्या दिया है ?	$\Delta ABC$
II - समस्या का ज्ञान (i) क्या सिद्ध करना है ?	$\Delta ABC$ में $\angle A + \angle B + \angle C = 180^\circ$
III - समस्या का हल (i) $\angle A + \angle B + \angle C = 180^\circ$ सिद्ध करने के लिए क्या स्वयं करनी होगी ? ii $\angle BAC$ किस कोण के बराबर है ?	$\Delta ABC$ की भुजा BC को D बिन्दु तक बढ़ाया जायेगा और BA    CE रेखा खींची जायेगी । $\angle BAC = \angle ACE$ (संगत कोण हैं)
IV - $\angle ABC$ किस कोण के बराबर है ? V - क्यों ?	$\angle ABC = \angle ECD$ (संगत कोण हैं)
VI - $\angle BAC + \angle ABC + \angle ACB$ किसके बराबर है ?	$\angle BAC + \angle ACB + \angle ABC = \angle ACE + \angle ECD + \angle ACB$
VII - $\angle ACE + \angle ECD + \angle ACB$ किसके अंश के हैं ?	$180^\circ$ के हैं)

संश्लेषण विधि के गुण - यह शिक्षण की एक प्रयोग-आधारित विधि है।

II - इस विधि में समझ और शक्ति दोनों कम लगती हैं।

iii- यदि इनमें से कोई एक ही की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती, तब दोनो और कमवोर बात भी इससे लाभ उठा सकते हैं।

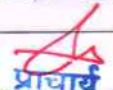
v- इस विधि में छोटे हस्त शिल्प को खोजा जाता है। इस विधि में दालों की वास्तविक क्रियाओं को करने का अवसर प्राप्त होता है।

**संश्लेषण विधि के दोष-** इस विधि में क्रियाओं के पदों का हथारे पास कोई कारण नहीं होता है। तब के अभाव में दालों को शब्दों का सहारा लेना पड़ता है।

ii- यह विधि शब्दों की क्रिया पर निर्भर होने के कारण इसमें यदि किसी शब्द का विस्तारण हो जाये तो उसे पुनः खोजा नहीं जा सकता।

iii- इस विधि में छोटे हस्त शिल्प को खोजा जाता है। अतः किसी बड़े शब्द की खोज नहीं हो पाती है।

यह सही है कि विश्लेषण-संश्लेषण दो अलग-अलग विधियाँ हैं। परन्तु यदि वास्तविक रूप में सोचा जाय तो विश्लेषण विधि अधूरी है जब तक कि संश्लेषण विधि का प्रयोग न किया जाय। संश्लेषण विधि भी अपने आप में अधूरी है। अतः दोनों विधियाँ एक-दूसरे की पूरक हैं अर्थात् अन्योन्याश्रित हैं, इसलिये दोनों विधियों का साथ-साथ प्रयोग करते हैं और समस्या का हल खोजते हैं। ग्राहक विषय में अधिकतर विश्लेषण विधि का प्रयोग करते हैं।

  
प्राचार्य  
मीरुत मेमोरियल महाविद्यालय  
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान  
पाण्डुपुर, ताखा, बलिया